आदर्श प्रश्न- पत्र - 1

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'ब'

कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड है -
   खंड क- **20 अंक**
   खंड ख- **15 अंक**
   खंड ग - **30 अंक**
   खंड घ - **25 अंक**
2. चारो खंडो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तर के विकल्प छाँटकर लिखिए -**

एक वृक्ष पर तोते के दो बच्चे रहते थे| दोनों एक ही जैसे थे- हरे-हरे पंख, लाल चोंच, चिकनी और कोमल देह| जब बोलते तब दोनों के कंठ से एक ही जैसी ध्वनी निकलती थी| एक का नाम था - सुपंखी और दूसरे का नाम सुकंठी| सुपंखी और सुकंठी एक ही माँ कि कोख से उत्पन्न हुए थे| दोनों के रूप-रंग, बोली और व्यवहार में कोई अंतर न था| दोनों साथ-साथ सोते-जागते, साथ-साथ दाना चुगते, पानी पीते, दिन भर फुदकते रहते| रात सुख-स्वप्नों में बीत जाती और दिन खेलने-कूदने और चहकने में| बड़े सुख से दोनों का जीवन बीत रहा था| पर यह सुख का जीवन आगे भी सुख से बीत पाता तब न !

एक दिन असमान काले-काले बादलों से घिर गया| घनघोर गर्जन हुआ| बिजली कड़की और बड़ी तेज़ आँधी आ गई| वन के सारे वृक्ष, झाड़ी-झुरमुट, पशु-पक्षी तहस-नहस हो गए| कुछ ज़मीन पर गिर कर नष्ट हो गए, कुछ आँधी के साथ उड़कर कहाँ से कहाँ चले गए| ऐसे में सुपंखी और सुकंठी भला कैसे बच पाते ! वे तो अभी बच्चे ही थे| सुपंखी तो आँधी के साथ उड़कर चोरों कि एक बस्ती में जा गिरा और सुकंठी एक पर्वत से टकराकर बेसुध हो गया, जहाँ से लुढ़ककर वह ऋषियों के एक आश्रम में जा गिरा|

इस प्रकार दोनों बच्चे एक-दूसरे से विलग हो गए| समय आगे बढ़ता रहा| सुपंखी चोरों कि बस्ती में पलता-बढ़ता रहा और सुकंठी ऋषियों के आश्रम में| धीरे-धीरे कई वर्ष बीत गए| एक दिन उसी राज्य का राजा अश्व पर सवार होकर आखेट के लिए निकला| बनैले पशुओं के पीछे दौड़ता-भागता जब थक गया तो सरोवर के किनारे विश्राम करने लगा| सभी सैनिक पीछे छूट गए| यह सरोवर चोरों की बस्ती के पास था| उस समय सरोवर के आसपास कोई नहीं था| बस, घने वृक्ष थे, जो हवा के झोंकों से से धीरे-धीरे झूम रहे थे| राजा थका तो था ही, उसे नींद आने लगी| वह अभी अर्धनिद्रा में ही था कि किसी कर्कश वाणी में उसकी नींद टूट गई| राजा ने इधर-उधर देखा, कोई नहीं था | तभी कर्कश वाणी फिर से सुनाई पड़ी, "पकड़ो, पकड़ो, यह व्यक्ति जो सोया है, राजा है| इसके गले में मोतियों कि माला है| अनेक आभूषण-अलंकार हैं इसके पास| लूट लो, सब कुछ लूट लो| इसे मारकर झाड़ी में डाल दो|" राजा हड़बड़ा

के उठ बैठा| सामने पेड़ की डाल पर एक तोता बैठा था| वही कर्णकटु वाणी में यही सब कुछ बोल रहा था| राजा को आश्चर्यहुआ| साथ ही उसे भय भी लगा| वह उठ खड़ा हुआ| अपने अश्व पर सवार हुआ| चलने लगा तो तोता फिर बोला, "राजा जाग गया ! देखो, देखो ... वह भागा जा रहा है ! पकड़ो इसे ... लो ... राजा गया| अलंकार गए| आभूषण गए| सब कुछ गया| कोई पकड़ ही नहीं रहा है|"

राजा उस स्थान से बहुत दूर निकल गया और एक पर्वत कि तलहटी में जा पहुँचा | पर्वत कि तलहटी में ऋषियों का एक आश्रम था| आश्रम में उस समय सन्नाटा छाया था| सभी ऋषि-मुनि भिक्षाटन के लिए गए हुए थे| राजा तन-मन विक्षुब्ध तो था ही, सोचा- यहीं विश्राम करूँ| उसने ज्यों ही आश्रम में प्रवेश किया उसे एक मधुर वाणी सुनाई पड़ी, "आइए राजन्, आइए ! ऋषियों के इस पावन आश्रम में आपका स्वागत है|" राजा ने चकित होकर सामने की ओर देखा - वृक्ष कि डाल पर बैठा एक तोता राजा का स्वागत कर रहा था| प्रथम दृष्टि में तो राजा को यही प्रतीत हुआ कि यह वहीं तोता है, जो सरोवर के किनारे मिला था - वही रंग, वही आकार-प्रकार| राजा पुनः ध्यान से उसे देखने लगा| तोता फिर बोला, "राजन् ! आप चकित क्यों हैं? इस आश्रम का आतिथ्य ग्रहण कीजिए| आप थके हैं, विश्राम कीजिए| जलाशय से जल पीजिए| आपको भूख भी लगी होगी| आश्रम के फल ग्रहण कीजिए|" राजा सोचने लगा - नहीं, यह तोता वह नहीं है, जो सरोवर के किनारे मिला था| इसकी वाणी कितनी मधुर है, कितनी कोमल है और वाणी में कितनी विनम्रता और शिष्टता है|

तोता फिर बोला, "राजन् ! आप किस संकोच में पड़ गए? आश्रम में प्रवेश कर हमें अनुगृहीत कीजिए|" राजा बोला "तुम्हारी मधुर वाणी सुनकर मैं दुविधा में पड़ गया हूँ| अभी कुछ समय पूर्व मुझे सरोवर के किनारे भी एक तोता ...." इतना सुनते ही तोता बोल उठा, "मैं सब समझ गया ! वह मेरा जुड़वाँ भाई सुपंखी है और मैं -सुकंठी| एक ही कोख से उत्पन्न होकर हम दोनों एक परिवेश में नहीं रह पाए| समय का ऐसा चकर चला कि दोनों अलग-थलग हो गए| वह चोरों कि बस्ती में पला-बढ़ा और मैं यहाँ ऋषियों के आश्रम में ...." कहते-कहते सुकंठी थोड़ा-सा रुका| फिर दुखी स्वर में बोला, "राजन्, सुपंखी मेरा भाई है| दो-चार बार मुझे मिला भी| मैंने बहुत चाहा कि वह मेरे पास इस पावन आश्रम में आ जाए| परंतु राजन्, उसे आश्रम का वातावरण रुचिकर नहीं लगा| जानते हैं क्यों? वह मुझसे विलग होकर सदैव चोरों कि बस्ती में रहा| वहीं की वाणी, वहीं का परिवेश और आचरण उसके भीतर रच-बस गए हैं|"

उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनिए |

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए |

(ख) तोते के बच्चों का जीवन बड़े सुख से कैसे बीत रहा था?

(ग) तोते के बच्चे आँधी में कहाँ-कहाँ जा गिरे?

(घ) राजा ने किसकी कर्कश वाणी सुनी और वह क्या कह रहा था?

(ङ) राजा ने ऋषियों के आश्रम में किसकी मधुर वाणी सुनी और वह क्या कह रहा था?

(च) निम्नलिखित वाक्य में उचित विराम-चिन्हों का प्रयोग करें -

तोता फिर बोला राजन् आप किस संकोच में पड़ गए
आश्रम में प्रवेश कर हमें अनुगृहीत कीजिए

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर, दिए गए प्रश्नो के उत्तरों में से सही विकल्प छांटकर लिखिए।**

तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का |
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,

जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता |
पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिसके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार सदा लय |
अचल खड़े रहते तो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता, दृढ़ता हँसती, जिनके यौवन के प्राणों में |
वही पंथ-बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हो निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर |
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरुणाई
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई |
आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना,
आज विगत के पृष्ठों पर तुमको, है नूतन इतिहास लिखाना |
उठो राष्ट्र के नव यौवन तुम, दिशा-दिशा का सुन आमंत्रण,
जगो देश के प्राण, जगा दो नए प्रात का नया जागरण |
'आज विश्व को यह दिखला दो, हममे भी जागी तरुणाई;
नई किरण की नई चेतना में हमने भी ली अँगड़ाई ||

उपर्युक्त काव्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनें |

(क) कविता में तरुणाई की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

(ख) नवयुवक किन स्थितियों का समाना करने को तैयार रहते हैं?

(ग) कवि क्या करने के लिए युवकों का आह्वान कर रहा है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए: "आज विगत युग के पतझर पर तुमको नव मधुमास खिलाना |"

खण्ड - ख

(व्याकरण)

3. **निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरित कीजिए |**

(क) बच्चा दौड़ कर मेरे पास आया | वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए|

(ख) राहुल आया और चला गया | वाक्य को सरल वाक्य में बदलिए |

(ग) कमाने वाला खाएगा| वाक्य को मिश्र वाक्य में बदलिए |

(घ) जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब वे चले गए | वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए |

4. **निम्नलिखित समस विग्रहों के समस्त पद एवं समास का नाम लिखें |**

(क) बुरा है जो चरित्र

(ख) पुस्तक का आलय

(ग) महान है जो विद्यालय

(घ) पीत/पिला है जो अंबर

5. **निम्नलिखित मुहावरों का सही अर्थ लिखिए |**

(क) आपा खोना

(ख) लाज रखना

(ग) हाथ विशाल

(घ) सिर-धुनना

6. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए।**

(क) अपन को तुम्हारी बात अच्छी नही लगी।

(ख) क्या तुम्हे चारों वेदों का नाम ज्ञात है?

(ग) गुफा में महान अंधेरा है।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नो के उत्तर दीजिए-**

मेरे भाई साहब मुझसे पाँच साल बड़े, लेकिन केवल तीन दरजे आगे | उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया, लेकिन तालीम जैसे महत्त्व के मामले में वह जल्दबाजी से काम लेना पसंद न करते थे | इस भवन की बुनियाद खूब मज़बूत डालना चाहते थे, जिस पर आलिशान महल बन सके | एक साल का काम दो साल में करते थे | कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे | बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने |

(क) पाठ और लेखक का नाम बताइए |

(ख) बुनियाद के पुख्ता होने से क्या आशय है?

(ग) बड़े भाई साहब कि विशेषता स्पष्ट करें |

8. **निम्नलिहित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-**

(क) दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

(ख) धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

(ग) राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी?

9. **लेखक के अनुसार बड़े भाई की रचनाओं को समझना छोटा मुँह बड़ी बात थी | कैसे?**

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै |
दुखिया दस कबीर है, जागै अरू रोवै ||

(क) कबीर के दुःख का कारण क्या है?

(ख) उपर्युक साखी का प्रतिपाद्य क्या है?

(ग) संसार खाने और सोने में मस्त क्यों है?

11. कबीर की सखियों से आप क्या समझते हैं?

12. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं| ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने करने के लिए तैयार हो जाता है"

खण्ड-घ

('लेखन')

13. दिए गए संकेत बिन्दुओ के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए-

भारत का विकास

संकेत-बिंदु: (i) भारत का अतीत (ii) भारत सोने की चिड़िया (iii) विभिन्न उद्योगों का विकासक्रम (iv) परमाणु संपन्न राज्य|

14. अपने जन्मदिन पर मित्र को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए|
15. आपके विद्यालय में वार्षिकोत्सव आतोजित पकरने पर विचार करने के लिए प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों की एक सभा बुलाई है| इस आशय की सूचना जारी करें|
16. मोहित और श्रवण आठवीं के छात्र हैं| दिसंबर की परीक्षाएँ चल रही हैं| इधर भारत-पाकिस्तान की एक दिवसीय क्रिकेट मैच-शृंखला का अंतिम मैच है| दोनों मैच देखना चाहते हैं, परंतु पढ़ाई के दवाब से भी डरते हैं उनमें हुई बातचीत की कल्पना कीजिए|
17. विद्यालय का वार्षिक खेल - दिवस मनाया जाएगा जिसमें पुराने विद्यार्थी और अभिभावक आमंत्रित हैं, समय और स्थान की सूचना देते हुए विज्ञापन लिखिए।

आदर्श प्रश्न- पत्र - 1

संकलित परीक्षा - I

विषय - हिंदी 'ब'

कक्षा - दसवी

निर्धारित समय: 3 घण्टे **अधिकतम अंक: 90**

खंड-क

(अपठित गद्यांश)

1. **(क)** उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक - जैसा खाया दाना, वैसा पाया बाना |

(ख) तोते के बच्चों का जिओवं बड़े सुख से बीत रहा था दोनों साथ-साथ जागते-सोते, साथ-साथ दाना चुगते, पानी पीते, दिन भर फुदकते रहते | रात सुख स्वप्नों में बीत जाती और दिन खलने-कूदने और चहकने में |

(ग) सुपंखी तो आँधी में उड़कर चोरों कि बस्ती में जा गिरा और सुकंठी एक पर्वत से टकराकर बेसुध हो गया और लुढ़कर ऋषियों के आश्रम में जा गिरा |

(घ) राजा ने सुपंखी कि कर्कश वाणी सुनी जो कह रहा था, "पकड़ो-पकड़ो, यह व्यक्ति जो सोया है, राजा है | इसके गले में मोतियों कि माला है | अनके आभूषण-अलकार हैं इसके पास | लूट लो, सब कुछ लूट लो | इसे मारकर झाड़ी में डाल दो|

(ङ) राजा ने आश्रम में सुकंठी कि मधुर वाणी सुनी जो कह रहा था, "आइए राजन्, आइए! ऋषियों के इस पावन आश्रम में आपका स्वागत है|"

(च) तोता फिर बोला, राजन्! आप किस संकोच में पड़ गए? आश्रम में प्रवेश कर हमें अनुगृहीत कीजिए|"

2. **(क)** तरुणाई संकटों से टकराने, लड़ने और उन्हें जितने का प्रबल वेग होता है| इस कविता में तरुणाई के साहस, जुझारूपन, उत्साह दृढ़ता, सहनशीलता आदि गुणों पर प्रकाश डाला गया है|

(ख) नवयुवक अपने सामने खड़ी मुसीबतों कि चट्टानों, विफलताओं, तूफानों और बाधाओं से जूझने के लिए सदा उद्यत रहते हैं|

(ग) कवि युवकों को जीवन की बाधाओं और चनौतियों का सामना करने कि प्रेरणा दे रहा है| वह भूतकाल के पराजयों तथा पतझड़ से अनुभव लेकर नई जीवन-शैली मधुमास को विकसित करने की चुनौती दे रहा है|

(घ) कवि देश की युवा-शक्ति को कहता है - तुम्हें भूतकाल की कमियों, ह्रासों और पराजयों तथा पतझड़ से शिक्षा लेनी चाहिए| क्योंकि नए अनुभवों के आधार पर तुम्हें नए युग की नई रचना करनी है| नवयुवकों को प्रगतिशील भावनाओं का नया वसंत खिलाना है|

खण्ड - ख

(व्याकरण)

3. **(क)** बच्चा दौड़ा और मेरे पास आया |

(ख) राहुल आकर चला गया |

(ग) जो कमाएगा, वह खाएगा |

(घ) मजदूरों ने गड्ढा खोदा और वे चले गए |

4. **(क)** दुश्चरित्र - कर्मधारय समास
   (ख) पुस्तकालय - तत्पुरुष
   (ग) महाविद्यालय - कर्मधारय
   (घ) पीतांबर - कर्मधारय
5. **(क)** अति क्रूद्ध होना
   (ख) सम्मान बचाना
   (ग) बहुत समर्थ होना
   (घ) पछताना
6. **(क)** मुझे तुम्हारी बात अच्छी नही लगी।
   (ख) क्या तुम्हे चरों वेदों के नाम ज्ञात है?
   (ग) गुफा में गहन अंधकार है।

खण्ड - ग

(पाठ्य-पुस्तक)

7. **(क)** पाठ - बड़े भाई साहब, लेखक - प्रेमचंद
   (ख) बुनियाद पुख्ता होना अर्थात् नींव का मजबूत होना | किसी भी भवन की मजबूती उसके आधार अथवा नींव पर निर्भर करती है | यहाँ बुनियाद पुख्ता होने से आशय है जल्दबाज़ी न करके गहन अध्ययन करना |
   (ग) बड़े भाई साहब शिक्षा ग्रहण करने में जल्दबाज़ी नहीं करते थे | वे शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे | अतः शिक्षा का गहन अध्ययन करते हुए उन्हें एक ही कक्षा पास करने में तीन-तीन वर्ष लग जाया करते थे | यहाँ व्यंग्य किया गया है |
8. **(क)** दूसरी बार पास होने पर छोटा भाई अपने बड़े भाई की सहनशीलता का अनुचित लाभ उठाने लगा | वह पहले से अधिक स्वच्छंद हो गया | वह अपना अधिक समय खेल-कूद में ही लगाने लगा | छोटा भाई बड़े भाई के उपदेशों पर ध्यान नहीं देता था |
   (ख) धर्मतल्ले के मोड़ पर आते-आते जुलूस में भाग लेने वाले इतने आंदोलनकारी घायल हो गए कि जुलूस बिखर गया | कई स्त्रियों को पकड़कर पुलिस ने लालबाज़ार जेल भेज दिया | पुलिस ने लाठी चलाना नहीं छोड़ा और धीरे-धीरे जुलूस में लोगों की संख्या कुछ देर के लिए कम हो गई | इसी कारण धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया था |
   (ग) राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के निर्माण के समय इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि इस फ़िल्म के एक भाग को बनाने में ही छह वर्ष के समय लग जाएगा |
9. छोटे भाई का कथन है कि बड़े भाई साहब स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे | हरदम किताब खोले बैठे रहते और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कभी कॉपी पर, किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे | कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वके दस-बीस बार लिख डालते | कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षर में लिखते | कभी ऐसी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य | मसलन एक बार उनकी कॉपी पर मैंने यह इबारत देखी - स्पेशल, अमीना, भाइयों-भाइयों, दरअसल. भाई-भाई | राधेश्याम, श्रीयुत राधेश्याम, एक घंटे तक - इसके बाद एक

आदमी का चेहरा बना हुआ था | मैंने बहुत चेष्टा कि इस पहली का कोई अर्थ निकालूँ, लेकिन असफल रहा और उनसे पूछने का साहस न हुआ | वह नौवीं जमात में थे, मैं पाँचवीं में | उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुँह बड़ी बात थी |

10. **(क)** कबीर के दुःख का कारण प्रभु को नहीं प्राप्त करना है| वे कहते हैं कि सुखी व्यक्ति वह है जो सिर्फ़ सांसारिक सुखों में डूबा रहता है तथा दुखी वह है तो संसार कि नश्वरता को को देखकर रोता रहता है| कबीर इसी नश्वरता को देखकर दुखी है|

   (ख) प्रस्तुत पंक्तियों का प्रतिपाद्य यह है कि प्रभु के प्रति जाग्रत मनुष्य उनके वियोग में तड़पता है जबकि सांसारिक लोग मौज करते हैं|

   (ग) संसार के लगभग सभी लोग सांसारिक सुखों को ही सुख मानते हैं|

11. 'साखी' शब्द 'साक्षी' शब्द का ही तद्भव रूप है| साक्षी साक्ष्य से बना है जिसका अर्थ होता हगे - प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है| संत संप्रदाय में अनुभव ज्ञान की ही महत्ता है, शास्त्रीय ज्ञान की नहीं| कबीर का अनुभव क्षेत्र विस्तृत था| कबीर जगह-जगह भ्रमण कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे | अतः उनके द्वारा रचित साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है| इसी कारण उनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' कहा जाता है| कबीर कि भाषा को सधुक्कड़ी भी कहा जाता है | 'साखी' वस्तुतः दोहा छंद ही है जिसका लक्षण है 13 और 11 के विश्राम से 24 मात्रा और अंत में जगण | प्रस्तुत पाठ की साखियाँ प्रमाण हैं कि सत्य देता हुआ ही गुरु शिष्य को जीवन के तत्त्वज्ञान की शिक्षा देता है| यह शिक्षा जितनी प्रभावपूर्ण होती है उतनी ही यद् रह जाने योग्य भी |

12. लेखक ने यह इसलिए कहा क्योंकि हरिहर काका जैसी स्थिति में उलझा प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि बार-बार की मौत से बेहतर एक बार की मौत होती है | हरिहर काका के चार भाई थे | तीन भाइयों का भरपूर परिवार था | हरिहर काका ने दो शादियाँ कीं लेकिन उनके संतान नहीं हुई | दोनों पत्नियों के मरने के बाद हरिहर काका ने अपना सारा समय भजन-कीर्तन और भाइयों के परिवार में बिताना आरंभ कर दिया | शुरू-शुरू में उनका अपने भाइयों के परिव्बार में बहुत आदर सत्कार होता था | लेकिन बाद में उनको रुखा-सुखा खाने को देते थे या फिर वह भी देना भूल जाते थे | जिस दिन हरिहर काका ने अपने खेतों पर अपना अधिकार जमाया उसी दिन से फिर तीनों भाई और महंत जी उनका भरपूर ख्याल रखने लगे थे | हरिहर काका अनपढ़ होते हुए भी समझ गए थे कि यह सारा आदर सत्कार उनके खेतों के कारण है | इसलिए उन्होंने अपने जीवित रहते अपने खेत किसी एक के नाम करने से मना कर दिया | उसी दिन से भाई और महंत जी उनके दुश्मन हो गए थे | हरिहर काका उन लोगों से भय मुक्त हो गए थे क्योंकि वह अपनी कीमत जान चुके थे | इसलिए वह अपने खेतों का उत्तराधिकारी किसी को नहीं बनाना चाहते थे | 'जब तक खेत उनके पास हैं तब तक सभी उनके इर्द-गिर्द घूम रहे हैं, बाद में उन्हें पूछने वाला कोई नहीं है|' इस सत्य को उन्होंने जान लिया था | हरिहर काका कि इसी मनः स्थिति के कारण लेखक ने उक्त कथन कहा |

खण्ड-घ

('लेखन')

13. **"भारत का विकास"**

भारत का अतीत कितना उन्नत था | इस बात का अंदाजा आयुर्वेद, धनुर्वेद, ज्योतिष, गणित, राजनीति, चित्रकला, वस्त्र-निर्माण से लगाया जा सकता है | कभी भारत रत्नों एवं हीरों की खान था | विदेशी इसे

दोने की चिड़िया के नाम से संबोधित करते थे | परंतु गुलामी ने हमारी समृद्धि को सोख लिया | आज़ादी के बाद अनेक स्थानों पर तेल, गैस, कोयले, लोहे, ताँबे आदि धातुओं की खानों का पता लगाया गया | युरेनियम के भी भंडार मिले हैं | परमाणु शक्ति का निर्माण किया जा रहा है | अनेक प्रकार के कल-कारखाने उभर रहे हैं | उद्योग-धंधों के जाल बिछ रहे हैं | अनेक औद्योगिक बस्तियां बस रही हैं | वस्त्र उद्योग उन्नति की चरम सीमा की ओर बढ़ रहा है | सिलाई मशीन, साइकिल, पँखे, रेडियो तथा खेलों का सामन दूसरे देशों को निर्यात किए जाते हैं | मेरे देश ने विभिन्न क्षेत्रों; जैसे कृषि, उद्योग, विज्ञान एवं परमाणु शक्ति आदि के क्षेत्रों में आशातीत प्रगति कि है और यह गौरव का विषय है कि आज भारत की गणना परमाणु संपन्न राज्यों में की जाती है |

14. मोहित मल्होत्रा,

493 शिव-गणेश अपार्टमेंट

महेशनगर, दिल्ली

दिनांक: 25 सितम्बर 2016

प्रिय श्रवण,

स्नेह |

मुझे आशा है कि तुम स्वस्थ व आनंदपूर्वक होंगे| मैं भी यहाँ सकुशल हूँ | विशेष समाचार यह है कि इस बार मेरा जन्मदिन धूमधाम से मनाया जा रहा है | तुम 22 जुलाई कि तिथि मेरे लिए आरक्षित रखना | तुम यहाँ 21 जुलाई को ही आ जाना और मेरी मदद करना | अभीनिमंत्रण पत्र छपकर नहीं आए हैं | आते ही, मैं तुम्हारे पास सबसे पहले भेजूँगा | तुम 21 जुलाई को आना नहीं भूलना |

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

मोहित

15. **सूचना**

श्री गुरुतेग बहादुर विद्या निकेतन

नानक पूरा, दिल्ली

दिनांक 25 सितम्बर 2016

सभी विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में वार्षिकोत्सव आयोजित करने के कार्यक्रम तय करें एवं उससे संबंधित अन्य मसलों/मुद्दों पर विचार विमर्श के लिए आप भोजनावकाश के बाद विद्यालय सभागार में उपस्थित हों | सबकी उपस्थिति अनिवार्य है | वार्षिकोत्सव को सफल बनाने के लिए सभी अपने-अपने सुझाव देने के लिए स्वतंत्र है|

प्रधानाचार्य

श्री गुरुतेग बहादुर विद्या निकेतन

नानक पूरा, दिल्ली

16. **मोहित -** ओएश्रवण! आज शृंखला का आखिरी मैच है | देखेगा?

श्रवण - और छोडूँगा क्या? देखूँगा |

मोहित - यार टीमें तो दोनों धुआँधार हैं| मजा बहुत आएगा |

श्रवण - हाँ, आजकल तो विराट भी पूरी फॉर्म में है और अश्विन भी | उसकी एक बार फिरकी चल जाए तो पाँच-छः खिलाड़ी गए समझो |

मोहित - वैसे, इसबार भारत की टीम काफी संतुलित और मजबूत है |

श्रवण - हाँ, यार टीम का जवाब नहीं |

17. विद्यालय का वार्षिक खेल - दिवस मनाया जाएगा जिसमें पुराने विद्यार्थी और अभिभावक आमंत्रित हैं, समय और स्थान की सूचना देते हुए विज्ञापन लिखिए।

उत्तर-

आमंत्रण

मॉडर्न वर्ल्ड स्कूल

वार्षिक खेल दिवस

समस्त पुराने विद्यार्थी व अभिभावक सहर्ष आमंत्रित है

दिनांक - 11-09-2016

समय - सुबह 11 बजे

स्थान - छत्रसाल मैदान

कृपया पधारकर वर्तमान विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करे।

आग्रहकर्ता

प्रभारी (आयोजन)

दूरभाष - **XXXXXXXXXX**